कालीबंगा सभ्यता की पुरातात्विक विवेचना

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निर्देशक

शोधार्थी

अक्षय कुमार

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

2023

अनुक्रमणिका

1.शोध परिचय

2.शोध अध्ययन की आवश्यकता

3.शिक्षा की परिभाषाएं

4.शोध समस्या

5.तकनीकी शब्दावली

6.शोध विधि

7.शोध के चर

8.शोध के उद्धेश्य

9.परिकल्पना

10.अध्ययन में अपनाये जाने वाली विधि

11.शोध का परिसीमन

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध एवं परिचय

कालीबंगा नगर हडप्पा सभ्यता का एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। यह नगर वर्तमान घग्घर नदी के बायें किनारे पर अवस्थित हैं। इसका काल खण्ड 2350ई.पू. से 1750ई.पू. का है। इस पुरातात्विक नगर की खोज अमलानंद घोष ने 1951–52 में की।

कालीबंगा नगर पर शोध करने से प्राचीन भारतीय मानव की उत्पति, सांस्कृतिक, धार्मिक व उनके राजनैतिक विचारधारा व जीवनशैली को समझनें में यह शोध कारगर साबित होगा।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

कालीबंगा नगर के पुरातात्विक महत्व पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ है। यह शोध कालीबंगा नगर को विश्व पटल पर दर्शानें में कारगर साबित होगा।

1. कालीबंगा के पुरातात्विक महत्व पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ है।
2. कालीबंगा पर शोध करने से वहॉ से उत्खन्न में प्राप्त साम्रगी को समझनें में मदद मिल सकेगी।
3. कालीबंगा पर शोध करने से वहॉ पर महिलाओं व उनकी जीवन शैली को समझनें में मदद मिल सकेगी।
4. कालीबंगा पर शोध करने से सभ्यता की उत्पति व विनाश के कारणों को समझनें में मदद मिल सकेगी।
5. कालीबंगा पर शोध करने से उनके अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार व अन्य सभ्यताओं के साथ सम्बन्धों को समझनें में मदद मिल सकेगी।

मानविकी एवं समाजशास्त्र की परिभाषा

मानविकी एवं समाजशास्त्र एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के अन्दर मौजूद जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है, और मानविकी एवं समाजशास्त्रीय वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने की योग्यता विकसित करती है।

मैक्स वेबर के अनुसार, ''समाजशास्त्र वह विज्ञान हैं जो सामाजिक क्रिया के व्याख्यात्मक बोध को प्रस्तुत करने का प्रयास करता हैं जिससे उसकी प्रक्रिया व प्रभावों की बुद्धिसंगत व्याख्या की जा सकें।

गिंसबर्ग के अनुसार,''समाजशास्त्र मानवीय अंतक्रियाओं और अंर्तसंबधों उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है।

शोध समस्या

कालीबंगा सभ्यता की पुरातात्विक विवेचना

तकनीकी शब्दावली

मानविकी का अर्थ –

मानविकी वह शैक्षणिक विषय हैं जिनमें प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञानों के मुख्यतः अनुभवजन्य बदलाव के विपरीत इसमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक विधियों का इस्तेमाल कर मानविकि का अध्ययन किया जाता है।

मानविकी अध्ययन का उद्धेश्य–

इसके अध्ययन से मानव का मानसिक विकास होता है और वह आगे चलकर मानवीय मुद्धे पूरे जोर तरीके से उठायेगा।

सेलखडी –

यह एक नरम पाषाण है।जिसका प्रयोग कालीबंगा सभ्यता के लोग आहत से चिन्ह उत्कीर्ण करते थें।

C-14-

यह एक रेडियों कार्बन पद्धति है। जिसका अर्ध आयुकाल 5730 साल का है। इस विधि द्वारा रेडियों एक्टिव पदार्थो की आयु सीमा निर्धारण करनें में प्रयोग किया जाता है।

शोध विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुंसधान में कई अध्ययन विधियाँ प्रचलित है। इस शोध समस्या के लिए शोधकर्मी नें सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि–

सर्वेक्षण विधि में उन लोगों से प्रश्न पूछकर ऑकडें इकट्ठे कियें जाते है। जिनके बारे में माना जाता है कि उनके पास जानकारी है।

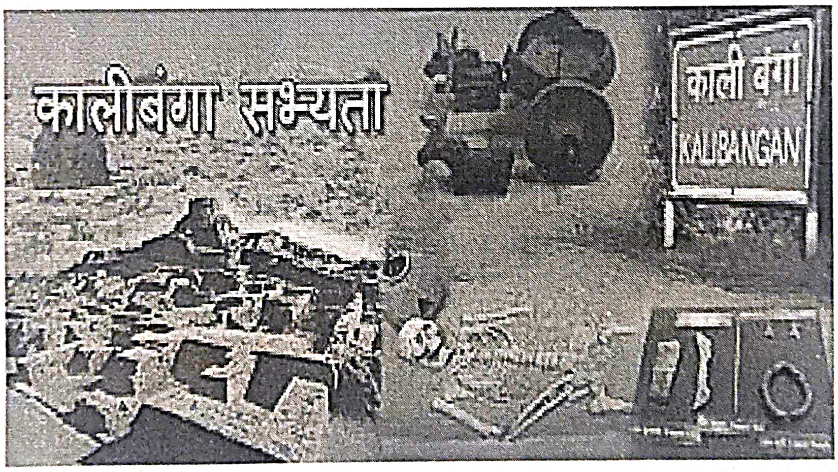

शोध के चर

शोधकर्मी अपनी समस्या से सम्बधित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना अंकित मूल्य रखने वाले गणों की विशेषता या योग्यता का करता है।

" चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य है" करलिंगर।

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है

1. प्राथमिक चर– प्राथमिक चर वे मूल आंकडें होते है जिसमें अनुसंधानकर्ता या उसके द्वारा नियुक्त प्रागणक, स्वंय सकत्र शामिल होते है।
2. द्वितीय चर – द्वितीय आंकडे.प्रकाशित या अप्रकाशित स्त्रोत से प्राप्त होते है।

शोध के उद्देश्य

मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्धेश्य का निर्धारण करता है। उद्धेश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते है तथा परिश्रम, धन व्यय हो जाता है। अतः सार्थक प्रयास व बाधित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्धेश्य का निर्धारण किया जाता है।

1. कालीबंगा नगर के पुरातात्विक महत्व पर शोध करने से वहाॅ के धार्मिक विचारधारा की बातें निकलकर सामने आयेगी।
2. कालीबंगा नगर के ऐतिहासिक महत्व पर शोध करने से वहाॅ की पर्यटन स्थल विश्वपटल पर उभरकर सामनें आयेंगें।
3. कालीबंगा सभ्यता में नारी समाज की भूमिका का अंकन करना।
4. कालीबंगा सभ्यता में पाये गयें अवशेष मृदभाण्ड,सेलखडी, आभूषण व कंकालों आदि पर हुए अन्वेषण के परिणामों पर प्रकाश डालना।

शोध की परिकल्पना

कालीबंगा एक प्राक्–हडप्पाकालीन थी। जिसकी खोज अमलानन्द घोष नें 1951–52 में की थी। यह सभ्यता मातृ सत्तामक थी। इस सभ्यता के बहुत से रचनात्मक कार्य हडप्पा व मोहनजोदड़ों से मेल खाते है। इसलिए दशरथ शर्मा ने इसे हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा है।

इस सभ्यता पर शोध करने से सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक विचारधारायें निकलकर सामने आयेंगी, जिसकों वर्तमान परिदृश्य के साथ सामंजस्य बैठाकर नवीन योजनाओं का सृजन किया जा सकेगा।

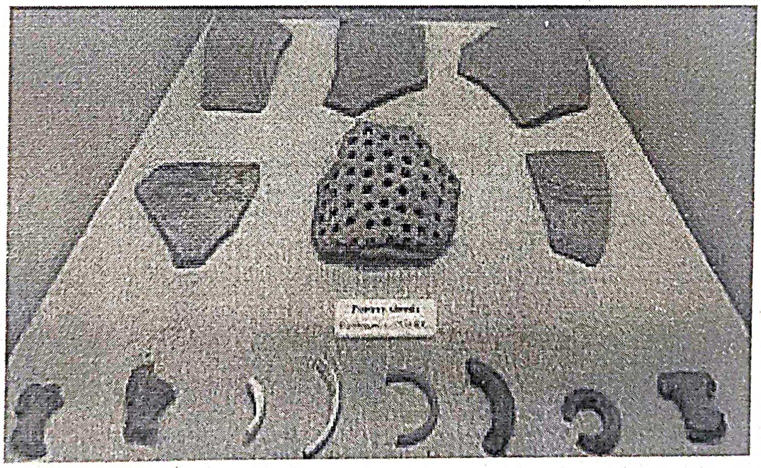

<u>अध्ययन में अपनायें जाने वाली विधि</u>

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया जायेगा। जिसके माध्यम से शोधार्थी अपने ऑकडों एवं तथ्यों को विभिन्न पुस्तकालयों की पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर अपने शोध में मेड़ता के ऐतिहासिक महत्व की विवेचना का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

सर्वेक्षण विधि के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित कर सकेगें।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध में की कालीबंगा के पुरातात्विक महत्व की विवेचना पर अध्ययन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कालीबंगा : सिन्धु घाटी सभ्यता से परे एक हड़प्पा महानगर, अभियान XVII (2) थापर बीके 1972 ।

2. कालीबंगा मानव कंकाल अवशेष : एक अस्थि–पुरातात्विक दृष्टिकोण, जर्नल ऑफ ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट XIX : 109-113।

3. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति – के.सी.श्रीवास्तव।

4. प्राचीन एंव पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास (पाषाण काल से 12 वीं शताब्दी तक) – उपिन्दर सिंह ।